अभंग ५२

(राग: झिंजोटी - ताल: तिलवाडा)

तो हा उभा बलभीम। केला असे पराक्रम।।ध्रु.।। माता प्रसवताची पाहे। रवीप्रति गिळूं जाये।।१।। उपजतां ब्रह्मचारी। नेणों कैसी असे नारी।।२।। मारियला जंबुमाळी। लंकेची केली होळी।।३।। जावोनिया पाताळासी। भिन्नकरी त्या देवीसी।।४।। साठी लक्ष ते योजना। तत्क्षणी आणी द्रोण।।५।। पाहोनिया रामदास लागे माणिक पायास।।६।।